नशे पर चर्चा | स्कूल से बाज़ार तक

खिलेन्द्र कुमार साहू

यह अज़ीम प्रेमजी स्कूल में शुरुआती समय था। एक दिन मेरी संगीत की कक्षा में कुछ ऐसी गतिविधि हुई जो मेरे मन को छू गई। यह कक्षा पहली की बात है। इससे मैंने सीखा कि बच्चे किस तरह अपने परिवेश की घटनाओं के बारे में परिचित होते हैं और उस माहौल में वे स्वयं भी शामिल होते हैं। बच्चे देखते हैं, सुनते हैं और तर्क कर काफ़ी कुछ सीखते व समझ भी विकसित करते हैं। उसी का एक छोटा-सा संस्मरण प्रस्तुत है। बच्चों के साथ यह चर्चा उनकी स्थानीय भाषा में हुई। लेकिन आपकी आसानी के लिए मैं इसे हिन्दी भाषा में लिख रहा हूँ।

द्वितीय कालखण्ड में, संगीत विषय पढ़ाने के लिए जब मैं कक्षा में गया तो '*बड़े सवेरे उठ मुर्गे ने*' कविता से कक्षा प्रारम्भ की। बच्चे बारी-बारी से इस कविता को गा रहे थे। गाने का क्रम चल ही रहा था कि एक बच्चे ने मुर्गे की आवाज़ निकाली। सब मुर्गे की आवाज़ निकालने पर जोर से हँसने लगे।

तभी एक बच्चे ने कहा, "टीचर देखो तो इसका दाँत टूट गया है!"

दूसरे बच्चे ने कहा, "यह ब्रश नहीं करता है।"

किसी अन्य बच्चे ने कहा, "इसका दाँत सड़ गया है।"

तो एक अन्य ने कहा, "यह पाउच/गुटखा खाता है।"

पाउच का नाम सुनते ही वह बच्चा गुस्सा हो गया। कहने लगा, "टीचर देखो न मेरे ऊपर ज़बरदस्ती इल्ज़ाम लगा रहे हैं। जबकि मैं यह सब नहीं खाता हूँ।"

मैंने कहा, "पाउच? यह क्या होता है?"

बच्चे बोले, "ओहो, क्या सर आप पाउच नहीं जानते?"

मैंने कहा, "नहीं।"

तो बच्चे बोले, "खाने का होता है।"

मैंने कहा, "तो यह खाने की चीज़ है। फ़िर उसे खाता है तो क्या हुआ?"

बच्चों ने जवाब दिया, "वाह सर, आप नहीं जानते, सर वो नशा करता है।"

मैंने कहा कि नशा करता है तो क्या हुआ? इस पर सभी बच्चों के अलग-अलग विचार आए। कुछ इस तरह : "टीचर जब कोई नशा करता है तो वो खूब हिलने-डुलने लगता है, बिजली के खम्भे से टकरा जाते हैं, घर में झगड़ा करते हैं, सड़क में सो जाते हैं, गन्दी गालियाँ देते हैं।"

मैंने कहा, "ओह! तो यह क्या अच्छी चीज़ है?"

बच्चे बोले, "नहीं।"

मैंने कहा, "हाँ, यह तो मुझे भी अच्छी चीज़ नहीं लग रही है। यह कहाँ मिलता है?"

बच्चों का जवाब था, "दुकान में।"

मैंने कहा, "जब यह अच्छी चीज़ नहीं है तो इसे क्यों बेचते हैं?"

बच्चे बोले, "टीचर, पैसा कमाने के लिए।"

मैंने सवाल किया, "तो क्या पाउच बेचकर ही पैसा कमाया जा सकता है?"

बच्चे एक साथ बोले, "नहीं।"

मैंने पूछा, "तो फिर?"

बच्चों ने जवाब दिया, "हाँ, कमा सकते हैं ना...आलू बेच के, प्याज बेच के, चॉकलेट बेच के, बिस्कुट बेच के, फसल बेच के, मोटू-पतलू (कॉमिक्स) बेच के, आलू चिप्स बेच के।"

मैं बोला, "तो फिर यह बन्द होना चाहिए।"

बच्चों ने कहा, "हाँ सही बात है।"

मैंने पूछा, "तो कैसे होगा यह?"

बच्चे बोले, "हम कल दुकान में जाकर बोलेंगे कि पाउच मत बेचो।"

चर्चा अभी चल रही थी। लेकिन तब तक दूसरे विषय की कक्षा का समय हो गया था, तो मैं चला गया।

चर्चा की शुरुआत में मैं गुटखे से अंजान-सा बन रहा था। इसलिए कुछ देर बाद बच्चों ने मुझे बुलाकर दिखाया। उन्होंने ब्लैकबोर्ड पर एक दुकान का चित्र बनाया हुआ था, जिसमें पाउच टंगे हुए थे।

जब मैं अगली बार उनकी कक्षा में गया तो उन्होंने अपने अनुभव बताए। बच्चों के अनुभव काफ़ी अलग-अलग थे। कुछ बच्चों ने बताया, "हम लोग अपने मौहल्ले की दुकानों में गए थे। हमने उनसे कहा कि वे पाउच बेचना बन्द कर दें। वहाँ पर बैठे लोगों ने और दुकान वाले ने हम लोगों को भगा दिया। और वे हँस रहे थे। कुछ अन्य बच्चों ने बताया, "ठेला वाला

बोला वह बेचना नहीं बन्द करेगा।”

एक बच्ची ने बताया, “पापा बोले ठीक है बन्द कर देंगे। पर अभी भी बेच रहे हैं।”

मैंने पहले भी अन्य संस्थानों में कार्य किया है, परन्तु ऐसा रोचक अनुभव कभी नहीं हुआ। छोटे बच्चों की भी ऐसी समझ होती है यह शायद मेरे लिए एक नया अनुभव था। स्कूल में प्रायः सभी शिक्षकों के लिए एक विशेष समय निर्धारित होता है और उस समय में शिक्षकों से विषयगत अपेक्षा भी रहती है और उसी के अन्तर्गत कक्षा आगे बढ़ती है। मुझे लगा कि बच्चों और उनके परिवेश की घटनाओं को समझने के लिए बातचीत एक बेहतर तरीक़ा हो सकता है और उसके लिए भी बच्चों के पास अवसर होने चाहिए। इसलिए मैंने संगीत की कक्षा में अपने विषय की गतिविधि को रोककर बच्चों के साथ चर्चा को आगे बढ़ाया।

उनकी बातों से मैं समझ पा रहा था कि किस तरह उनके या हमारे परिवेश में या व्यापक समाज में वयस्क, छोटे बच्चों को या उनकी बातों को सीधे तौर पर दबा देते हैं या नज़रअन्दाज़ कर देते हैं। उनके विचारों को उतना महत्त्व नहीं देते हैं, या यह समझते हैं कि बच्चे हैं कोई फ़र्क नहीं पड़ता। यह बच्चे भले ही आज शारीरिक या मानसिक रूप से उतने सक्षम नहीं हैं, जो उनसे अपनी बात मनवा सकें या किसी तरह का वाद-विवाद कर सकें। परन्तु बच्चे सही-ग़लत का फ़र्क समझ कर बड़ों के बीच अपनी बात रखकर विरोध कर पाने में सफल रहे हैं यह बड़ी बात है। बच्चों की यह सोच यदि इसी तरह बनी रही तो निश्चित ही वे आने वाले समय में एक बेहतर समाज को स्थापित करने में बहुमूल्य भूमिका निभा सकेंगे।



बच्चों ने बनाए 'पाउच' की दुकान के चित्र



खिलेन्द्र कुमार साहू ने शास्त्रीय संगीत में एमए और विशारद की उपाधि हासिल की है। पिछले सात वर्षों से वे शिक्षा के क्षेत्र में संगीत से जुड़े हुए हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन जैसे राष्ट्रीय चैनेलों पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लोकगीतों की प्रस्तुति उनकी विशेष उपलब्धि रही है। वे छोटे बच्चों को संगीत के माध्यम से, गीत गाकर, वाद्ययन्त्र बजा कर और बातचीत कर भाषागत कौशल सिखाने की प्रक्रिया में शामिल हैं। 2017 से वे अज़ीम प्रेमजी स्कूल, शंकरदाह, धमतरी (छत्तीसगढ़) में संगीत शिक्षक के तौर पर कार्यरत हैं। उनसे khilendra.sahu@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।